NORTH POINT SR. SEC. BOARDING SCHOOL

UNSEEN PASSAGE CLASS- 11

1) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

. लोकतंत्र के तीनों पायों–विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का अपना–अपना महत्त्व है, किंतु जब प्रथम दो अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होती हैं या संविधान के दिशा–निर्देशों की अवहेलना करती हैं, तो न्यायपालिका का विशेष महत्त्व हो जाता है। न्यायपालिका ही है जो हमें आईना दिखाती है, किंतु आईना तभी उपयोगी होता है, जब उसमें दिखाई देने वाले चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो।

सर्वोच्च न्यायालय के अनेक जनहितकारी निर्णयों को कुछ लोगों ने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना, पर जनता को लगा कि न्यायालय सही है। राजनीतिक चश्मे से देखने पर भ्रम की स्थिति हो सकती है। प्रश्न यह है कि जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है। राजनीतिक–दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाता है और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है।

हम कसमें खाते हैं जनकल्याण की और कदम उठाते हैं आत्मकल्याण के। ऐसे तत्वों से देश को, समाज को सदा खतरा रहेगा। अतः जब कभी कोई न्यायालय ऐसे फैसले देता है, जो समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों, तो जनता को उसमें आशा की किरण दिखाई देती है। अन्यथा तो वह अंधकार में जीने को विवश है ही।

प्रश्नः 1.
गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए?

प्रश्नः 2.
लोकतंत्र में न्यायपालिका कब विशेष महत्त्वपूर्ण हो जाती है? क्यों?

प्रश्नः 3.
आईना दिखाने का तात्पर्य क्या है ? और न्यायपालिका कैसे आईना दिखाती है?

प्रश्नः 4.
'चेहरे की विद्रूपता' से क्या तात्पर्य है और यह संकेत किनके प्रति किया गया है?

प्रश्नः 5.
भ्रष्टाचार का जन्म कब और कैसे होता है ?

प्रश्नः 6.
जनता को आशा की किरण कहाँ और क्यों दिखाई देती है?

2) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

. शिक्षा के क्षेत्र में पुनर्विचार की आवश्यकता इतनी गहन है कि अब तक बजट, कक्षा, आकार, शिक्षक–वेतन और पाठ्यक्रम आदि के परंपरागत मतभेद आदि प्रश्नों से इतनी दूर निकल गई है कि इसको यहाँ पर विवेचित नहीं किया जा सकता। द्वितीय तरंग दूरदर्शन तंत्र की तरह (अथवा उदाहरण के लिए धूम्र भंडार उद्योग) हमारी जनशिक्षा प्रणालियाँ बड़े पैमाने पर प्रायः लुप्त हैं। बिलकुल मीडिया की तरह शिक्षा में भी कार्यक्रम विविधता के व्यापक विस्तार और नये मार्गों की बहुतायत की आवश्यकता है।

केवल आर्थिक रूप से उत्पादक भूमिकाओं के लिए ही निम्न विकल्प पद्धति की जगह उच्च विकल्प पद्धति को अपनाना होगा यदि नई थर्ड वेव सोसायटी में शिष्ट जीवन के लिए विद्यालयों में लोग तैयार किए जाते हैं। शिक्षा और नई संचार प्रणाली के छह सिद्धांतों–पारस्परिक क्रियाशीलता, गतिशीलता, परिवर्तनीयता, संयोजकता, सर्वव्यापकता और सार्वभौमिकरण के बीच बहुत ही कम संबंध खोजे गए हैं।

अब भी भविष्य की शिक्षा पद्धति और भविष्य की संचार प्रणाली के बीच संबंध की उपेक्षा करना उन शिक्षार्थियों को धोखा देना है जिनका निर्माण दोनों से होना है। सार्थक रूप से शिक्षा की प्राथमिकता अब मात्र माता–पिता, शिक्षकों एवं मुट्ठी भर शिक्षा सुधारकों के लिए ही नहीं है, बल्कि व्यापार के उस आधुनिक क्षेत्र के लिए भी प्राथमिकता में है जब से वहाँ सार्वभौम प्रतियोगिता और शिक्षा के बीच संबंध को स्वीकारने वाले नेताओं की संख्या बढ़ रही है। दूसरी प्राथमिकता कंप्यूटर वृद्धि, सूचना तकनीक और विकसित मीडिया के त्वरित सार्वभौमीकरण की है।

कोई भी राष्ट्र 21वीं सदी के इलेक्ट्रॉनिक आधारिक संरचना, एंब्रेसिंग कंप्यूटर्स, डाटा संचार और अन्य नवीन मीडिया के बिना 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था का संचालन नहीं कर सकता। इसके लिए ऐसी जनसंख्या की आवश्यकता है जो इस सूचनात्मक आधारिक संरचना से परिचित हो, ठीक उसी प्रकार जैसे कि समय के परिवहन तंत्र और कारों, सड़कों, राजमार्गों, रेलों से सुपरिचित है।

वस्तुतः सभी के टेलीकॉम इंजीनियर अथवा कंप्यूटर विशेषज्ञ बनने की ज़रूरत नहीं है, जैसा कि सभी के कार मैकेनिक होने की आवश्यकता नहीं है, परंतु संचार प्रणाली का ज्ञान कंप्यूटर, फैक्स और विकसित

दूर संचार को सम्मिलित करते हुए उसी प्रकार आसान और मुफ्त होना चाहिए जैसा कि आज परिवहन प्रणाली के साथ है। अतः विकसित अर्थव्यवस्था चाहने वाले लोगों का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए कि सर्वव्यापकता के नियम की क्रियाशीलता को बढ़ाया जाए–वह है, यह निश्चित करना कि गरीब अथवा अमीर सभी नागरिकों को मीडिया की व्यापक संभावित पहुँच से अवश्य परिचित कराया जाए।

अंततः यदि नई अर्थव्यवस्था का मूल ज्ञान है तब सतही बातों की अपेक्षा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का लोकतांत्रिक आदर्श सर्वोपरि राजनीतिक प्राथमिकता बन जाता है।

प्रश्नः 1.
उपयुक्त शीर्षक दीजिए?

प्रश्नः 2.
लेखक का मुख्य उद्देश्य क्या है?

प्रश्नः 3.
इस गद्यांश का मूल विषय क्या है?

प्रश्नः 4.
सर्वव्यापकता का अर्थ बताइए?

प्रश्नः 5.
शिक्षा की प्राथमिकता किन–किन के लिए है?

प्रश्नः 6.
आज कैसी संचार प्रणाली का ज्ञान होना चाहिए?

3) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

. सभी मनुष्य स्वभाव से ही साहित्य–स्रष्टा नहीं होते, पर साहित्य–प्रेमी होते हैं। मनुष्य का स्वभाव ही है सुंदर देखने का। घी का लड्डू टेढ़ा भी मीठा ही होता है, पर मनुष्य गोल बनाकर उसे सुंदर कर लेता है।

मूर्ख–से–मूर्ख हलवाई के यहाँ भी गोल लड्डू ही प्राप्त होता है; लेकिन सुंदरता को सदा–सर्वदा तलाश करने की शक्ति साधना के द्वारा प्राप्त होती है। उच्छृखलता और सौंदर्य–बोध में अंतर है।

बिगड़े दिमाग का युवक परायी बहू–बेटियों के घूरने को भी सौंदर्य–प्रेम कहा करता है, हालाँकि यह संसार की सर्वाधिक असुंदर बात है। जैसा कि पहले ही बताया गया है, सुंदरता सामंजस्य में होती है और सामंजस्य का अर्थ होता है, किसी चीज़ का बहुत अधिक और किसी का बहुत कम न होना। इसमें संयम की बड़ी ज़रूरत है। इसलिए सौंदर्य–प्रेम में संयम होता है, उच्छृखलता नहीं।

इस विषय में भी साहित्य ही हमारा मार्ग–दर्शक हो सकता है। जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता उसे दूसरे से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए। मनुष्य कुछ ऐसी जटिलताओं में आ फँसा है कि उसके भावों को ठीक–ठीक पहचानना हर समय सुकर नहीं होता। ऐसी अवस्था में हमें मनीषियों के चिंतन का सहारा लेना पड़ता है। इस दिशा में साहित्य के अलावा दूसरा उपाय नहीं है।

मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य है और उसे मनुष्य पद का अधिकारी बने रहने के लिए साहित्य ही एकमात्र सहारा है। यहाँ साहित्य से हमारा मतलब उसकी सब तरह ही सात्त्विक चिंतन–धारा से है।

प्रश्नः 1.
गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

प्रश्नः 2.
साहित्य स्रष्टा और साहित्य प्रेमी से क्या तात्पर्य है?

प्रश्नः 3.
लड्डू का उदाहरण क्यों दिया गया है?

प्रश्नः 4.
लेखक ने संसार की सबसे बुरी बात किसे माना है और क्यों?

प्रश्नः 5.
जीवन में संयम की ज़रूरत क्यों है ?

प्रश्नः 6.
हमें विद्वानों के चिंतन की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

4) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

. वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं औद्योगिक प्रगति के पूर्व के मनोरंजन एवं आज के युग में उपलब्ध मनोरंजन में तथा इससे संबंधित हमारी आवश्यकताओं एवं अभिरुचि में बहुत अधिक अंतर आ गया है। पहले मनोरंजन का उद्देश्य मात्र मनोरंजन होता था और यह प्रक्रिया धार्मिक एवं सामाजिक भावों से संलग्न थी। ऐसा मनोरंजन व्यक्तित्व के गठन एवं स्वस्थ दृष्टिकोण के उन्नयन में सहायक होता था किंतु आज इसका महत्त्वपूर्ण उद्देश्य 'अर्थप्राप्ति' हो गया है।

संभवतः इसी कारण मनोरंजन का स्वरूप पूर्णतः बदल गया है। आधुनिक परिवेश में मनोरंजन का जो भी रूप उपलब्ध है, वह हमारे व्यक्तित्व के गठन पर कुठाराघात करता है, आदर्शों को झुठलाता है, अस्वस्थ अभिरुचि एवं दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देता है या जीवन के सब्जबाग दिखाता है जो जीने योग्य नहीं है। यह रूप व्यक्ति, समाज और विशेषकर हमारी भावी पीढ़ी को भ्रमित कर रहा है।

मनोरंजन से संबद्ध विभिन्न संस्थाएँ–अभद्र सिनेमा नृत्यशालाएँ, फ़ैशन परेड आदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति एवं समाज के जीवन को विकृत कर रहे हैं। बड़े–बड़े नगरों की नृत्यशालाओं एवं नाइट क्लबों में मनोरंजन के नाम पर जो गतिविधियाँ संपन्न होती हैं वे तथाकथित आधुनिक एवं प्रगतिशील विचारधारा से भले ही समर्थित हों, किंतु स्वस्थ भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार तो वे पश्चिमी देशों की अंधी नकल ही हैं।

इनके समर्थक यह भूल जाते हैं कि उनका मानसिक गठन, संस्कार, रीति–रिवाज तथा जीवन–पद्धति पश्चिमी देशों से एकदम भिन्न है। इस प्रकार देश में मनोरंजन के नाम पर जो भी भौंडापन उपलब्ध है–वह विघटन का स्रोत है, विकारों का जनक है एवं क्षयग्रस्त जीवन का पर्याय है।

प्रश्नः 1.
वैज्ञानिक प्रगति से पूर्व और बाद के मनोरंजन के स्वरूप और हमारी सोच में मूल अंतर क्या है?

प्रश्नः 2.
आधुनिक मनोरंजन जीवन को कैसे प्रभावित कर रहा है?

प्रश्नः 3.
कैसे कहा जा सकता है कि मनोरंजन का एक विशेष स्वरूप भावी पीढ़ी को भ्रमित कर रहा है?

प्रश्नः 4.
पश्चिमी देशों का अंधानुकरण किसे कहा है और क्यों?

प्रश्नः 5.
मनोरंजन के नाम पर 'भौंडापन' किसे कहा गया है? उसके क्या परिणाम हुए हैं?

प्रश्नः 6.
गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए?

5) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

. असंगठित होने के वाबजूद रेहड़ी पटरी कारोबारी शहरी अर्थव्यवस्था के प्रमुख अंग हैं, जो शहरी आबादी को विशेषकर आम आदमी को उनकी ज़रूरत की चीजें और सुविधाएँ सस्ती दरों पर उपलब्ध कराते हैं। देश की अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले रेहड़ी पटरी व्यवसायी और फेरीवाले समाज में हमेशा से हाशिए पर रहे हैं। रेहडी पटरी कारोबारी वे लोग होते हैं जो औपचारिक क्षेत्र में नियमित काम नहीं पा सकते क्योंकि उनकी शिक्षा और कौशल का स्तर बहुत ही कम होता है।

वे अपनी जीविका की समस्या मामूली वित्तीय संसाधनों और परिश्रम से दूर करते हैं। हमारे देश में रेहड़ी पटरी व्यवसाय न केवल उपभोक्ताओं के व्यापक हित की दृष्टि से बल्कि रोजगार सृजन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें न केवल न्यूनतम पूँजी से रोज़गार का सृजन होता है बल्कि यह उपभोक्ताओं को भी कम से कम कीमत पर उनकी ज़रूरत की चीजें उपलब्ध कराता है।

दुनियाभर में रेहड़ी पटरी पर कारोबार होता है। विकसित देशों में वर्षों से खुदरा व्यापार करने वाले छोटे कारोबारियों को न सिर्फ कानून का संरक्षण मिला हुआ है बल्कि इस प्राचीन कारोबारी प्रणाली को कानून की हदों में बाँधकर रखा गया है लेकिन हमारे देश में अब जाकर एक ऐसा कानून बना है जिसके जरिये इस पुरानी कारोबारी परंपरा को नियमित करने तथा इस कारोबार में लगे लोगों को अधिकार देने का प्रावधान किया गया है।

रेहड़ी–पटरी आजीविका संरक्षण और फेरी विनियमन कानून का उद्देश्य देश के दो करोड़ से अधिक रेहड़ी पटरी कारोबारियों को उचित और पारदर्शी माहौल में बिना किसी भय प्रताड़ना के कारोबार करने का माहौल तैयार करना है, ताकि वे अपना काम गरिमा के साथ कर सकें। यह कानून लगभग एक करोड़ परिवारों को आजीविका की सुरक्षा देने के उद्देश्य से तैयार किया है।

प्रश्नः 1.
उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

रेहड़ी पटरी वालों की शहर में क्या भूमिका है?

प्रश्नः 3.
रोज़गार सृजन में रेहड़ी पटरी व्यवसाय का योगदान बताइए?

प्रश्नः 4.
विदेशों में इनकी क्या स्थिति है ?

प्रश्नः 5.
भारत में नए कानून का क्या उद्देश्य है?

प्रश्नः 6.
समाज में रेहड़ी–फेरीवालों की दशा कैसी है?